१. सच्चा परमेश्वर यह कहता है

जिन बालकों को मैंने अत्यन्त प्यार से पाला-पोसा उन्होंने ही मेरा विरोध किया। बैल या गदहा जैसा पशु भी अपने स्वामी को नहीं भूलता। परन्तु ये लोग, जिनको मैंने बनाया, पूर्णतः मुझे भूल गए हैं। चाहे मैं इनके लिए कुछ भी क्यों न करूँ, फिर भी वे विचार नहीं करते।

हाय! मनुष्य कितना दुष्ट है। मानों गन्दगी में रहने के लिए ही उसने जन्म लिया है। उसने सच्चे परमेश्वर को त्याग दिया और उस से बहुत दूर हो गया है।

अपनी आँखें आकाश की ओर उठाकर देखो, किसने इन तारागणों की सृष्टि की? क्या तुम इन सब को देखने के बाद भी इस अनन्त परमेश्वर को नहीं पहचानते, जो सम्पूर्ण पृथ्वी का सृजनहार है?

मुझे छोड़ और दूसरा कोई परमेश्वर नहीं। एकमात्र परमेश्वर मैं ही हूँ। मैं वही हूँ, जिसने प्रकाश और अंधकार को बनाया। मैंने ही पृथ्वी बनाई तथा इस पर रहने के लिए मनुष्य की रचना की। अपने ही हाथों से मैंने आकाश को ताना और इस में अनगिनत तारों को फैलाया।

मेरे बालको, मेरी सुनो। मेरे वचन पर ध्यान दो। सच्चाई मेरी ही ओर से आती है, तथा मेरी ध[illegible]ता ही मानव-जाति की ज्योति है। मैं, परमेश्वर जो तुम्हारा सृज[illegible]ूँ, तुम्हें पुकार रहा हूँ। तुम मनुष्यों से क्यों डरते हो जो घास की तर[illegible] जाते तथा मर जाते हैं ? तुम एक भ्रष्ट मनुष्य से क्यों डरते हो और उस परमेश्वर से नहीं डरते, जिसने तारागणों को स्थापित किया तथा जिसने पृथ्वी की सृष्टि की।

बुराई से फिरो ! भलाई करना सीखो !

ओह, अपने को धोकर शुद्ध करो। और फिर कभी पाप न करो। अपने बुरे मार्गों से फिरो तथा भलाई करना सीखो। गरीबों, अनाथों और विधवाओं की सहायता करो।

आओ, हम इस विषय पर विचार करें। प्रभु परमेश्वर कहता है, तुम्हारे पाप चाहे कितने ही गन्दे क्यों न हों, मैं तुम्हें हिम के समान श्वेत कर दूँगा। यदि तुम्हारे पाप गहरे लाल रंग के समान भी हों, फिर भी वे ऊन के समान श्वेत हो जाएँगे। यदि तुम आज्ञाकारी बनकर मेरी मानो, तो तुम्हें कभी भी सच्चे आनन्द की घटी न होगी।

मैं, हाँ केवल मैं ही हूँ, जो अपने नाम के लिए तुम्हारे सब पापों को मिटा दूँगा और उनको फिर कभी स्मरण न करूँगा। देखो, इसी समय तुमको अपने पापों पर विचार करना चाहिए ताकि मैं इस प्रतिज्ञा के अनुसार तुम्हारे पापों को क्षमा कर सकूँ। क्योंकि आरम्भ से ही तुम्हारे पूर्वजों ने मेरे विरुद्ध पाप किया है और तुम्हारे अगुवों ने विद्रोह किया है।

ृथ्वी की ज्योति है।

"मैं परमेश्वर, तुम्हारा सृजनहार हूँ" यही मसीह सच्चा परमेश्वर है।

जगत तथा उसकी सब वस्तुओं की सृष्टि करने के बाद ा हम मनुष्य को अपने ही स्वरूप में बनाएँ जिससे कि वह पृथ्वी, और आकाश की समस्त वस्तुओं पर अधिकार रखे।"

अत: परमेश्वर ने ऐसा ही किया। उसने अपने ही स्वरूप में एक नुष्य की सृष्टि की। उसने पुरुष की सृष्टि पहले की, उसके पश्चात् स्त्री की।

फिर परमेश्वर ने पूर्व की ओर अदन में एक वाटिका लगाई, और उस मनुष्य को, जिसे उसने रचा था, उसमें रहने के लिए रख दिया। पुरुष का नाम आदम, स्त्री का नाम हव्वा रखा गया। वाटिका में परमेश्वर ने विभिन्न प्रकार के सुन्दर पौधे तथा उत्तम फल वाले वृक्षों को भी लगाया। वाटिका के मध्य में उसने एक 'जीवन का वृक्ष', तथा 'भले-बुरे के ज्ञान का वृक्ष' भी लगाया।

ओह, अपने प... ...मनाओं पर उसे अधिकार दें।"
बुरे मार्गों से फिरो तथा भलाई क...
विधवाओं की सहायता करो।

आओ, हम इस विषय पर विचार करें। प्रभु परमेश्व... नहीं सुना
तुम्हारे पाप चाहे कितने ही गन्दे क्यों न हों, मैं तुम्हें हिम के समान श्... नहीं
दूँगा। यदि तुम्हारे पाप गहरे लाल रंग के समान भी हों, फिर भी वे ऊ... है
समान श्वेत हो जाएँगे। यदि तुम आज्ञाकारी बनकर मेरी मानो, तो तु...
कभी भी सच्चे आनन्द की घटी न होगी।

मैं, हाँ केवल मैं ही हूँ, जो अपने नाम के लिए तुम्हारे सब पापों को मिटा दूँगा और उनको फिर कभी स्मरण न करूँगा। देखो, इसी समय तुमको अपने पापों पर विचार करना चाहिए ताकि मैं इस प्रतिज्ञा के अनुसार तुम्हारे पापों को क्षमा कर सकूँ। क्योंकि आरम्भ से ही तुम्हारे पूर्वजों ने मेरे विरुद्ध पाप किया है और तुम्हारे अगुवों ने विद्रोह किया है।

भूसे की नाईं उड़ा ले जाती है।

पवित्र परमेश्वर इस प्रकार पूछता है।

"तुम मेरी तुलना किस से करोगे? मेरे समान कौन है?"

२. परमेश्वर के स्वरूप में

जगत की सृष्टि से पहले अर्थात् आदि में 'वचन' था। 'वचन' परमेश्वर के साथ था। यही 'वचन' अर्थात् मसीह स्वयं परमेश्वर था। उसके बिना कोई भी वस्तु उत्पन्न नहीं हुई। सभी वस्तुएँ मसीह के द्वारा सृजी गईं।

'वचन' इस जगत में आया, तथा वह हमारे अर्थात् मानव-जाति के साथ रहा। उसमें सच्चा जीवन था और यही जीवन मनुष्यों की ज्योति है। अव हम सब ने निश्चय देख लिया है कि यही मसीह सच्चा परमेश्वर है।

परमेश्वर ने जगत तथा उसकी सब वस्तुओं की सृष्टि करने के बाद कहा, "आओ हम मनुष्य को अपने ही स्वरूप में बनाएँ जिससे कि वह पृथ्वी, समुद्र और आकाश की समस्त वस्तुओं पर अधिकार रखे।"

अतः परमेश्वर ने ऐसा ही किया। उसने अपने ही स्वरूप में एक मनुष्य की सृष्टि की। उसने पुरुष की सृष्टि पहले की, उसके पश्चात् स्त्री की।

फिर परमेश्वर ने पूर्व की ओर अदन में एक वाटिका लगाई, और उस मनुष्य को, जिसे उसने रचा था, उसमें रहने के लिए रख दिया। पुरुष का नाम आदम, स्त्री का नाम हव्वा रखा गया। वाटिका में परमेश्वर ने विभिन्न प्रकार के सुन्दर पौधे तथा उत्तम फल वाले वृक्षों को भी लगाया। वाटिका के मध्य में उसने एक 'जीवन का वृक्ष', तथा 'भले-बुरे के ज्ञान का वृक्ष' भी लगाया।

परमेश्वर ने अदन की वाटिका में मनुष्य को इसलिए रखा कि वह वहाँ रहते हुए उसकी देख-रेख, और उसका प्रबन्ध करे। उसने आदम को यह आज्ञा दी, "भले-बुरे के ज्ञान के वृक्ष को छोड़ तू जिस किसी वृक्ष का फल खाना चाहे, खा सकता है। परन्तु भले-बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल मत खाना, क्योंकि यदि तू ऐसा करेगा, तो निश्चय मर जाएगा।"

परन्तु सर्प अर्थात् शैतान ने स्त्री को धोखा दिया। स्त्री ने उसी वृक्ष का फल खा लिया, जिसके लिए परमेश्वर ने मना किया था। उसने उसमें से कुछ अपने पति को भी दिया और उसने भी खा लिया।

तब परमेश्वर ने आदम से कहा, "यद्यपि मैंने तुझे ऐसा करने को मना किया था, फिर भी तूने अपनी पत्नी की बात मानकर उस वृक्ष के फल को

"तू निश्चय मर जाएगा।"
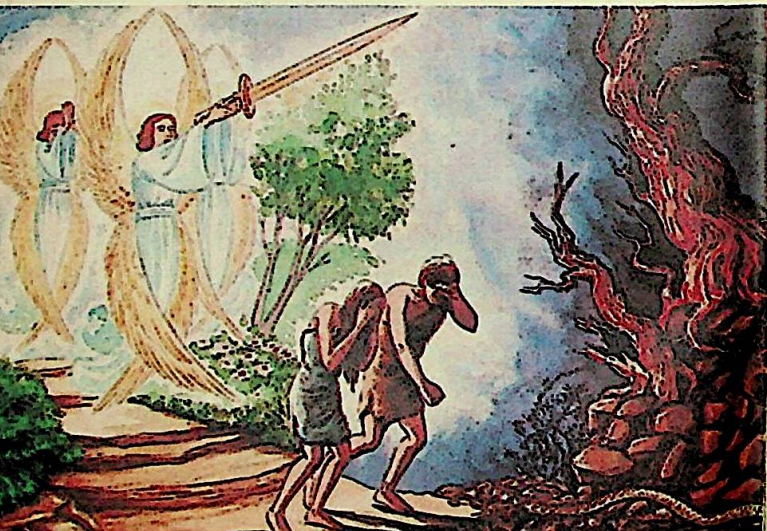
खाया। अतः अब से तू अपनी मृत्यु के दिन तक इस भूमि को बड़ी थकान और परिश्रम के साथ जोतेगा तथा पसीने के साथ उसकी कमाई खाएगा, और अन्त में मिट्टी ही में मिल जाएगा, जिससे तू बना है। तू मिट्टी से ही बना था और मिट्टी में ही वापस चला जाएगा।"

फिर परमेश्वर ने कहा, "मनुष्य भले-बुरे का ज्ञान पाकर इस बात में हमारे ही समान हो गया है। इसलिए अब ऐसा न हो कि वह हाथ बढ़ाकर 'जीवन के वृक्ष' का फल भी तोड़कर खा ले और सदा जीवित रहे।" इसलिए परमेश्वर ने आदम तथा उसकी पत्नी को वाटिका से निकाल दिया। फिर उसने प्रवेश-द्वार पर एक ज्वालामय तलवार और स्वर्गदूतों को पहरे के लिए रख दिया।

अब इसी आदम और हव्वा से सन्तानें उत्पन्न हुईं और वे इतनी बढ़ गईं कि सम्पूर्ण पृथ्वी पर फैल गईं। जब परमेश्वर ने देखा कि पृथ्वी मनुष्यों के पाप से भरी जा रही है, तथा मनुष्यों के हृदय से केवल दुष्टता ही निकलती है तो वह दुःखी हुआ, और मनुष्य को बनाने से पछताया।

"मैं इस मानव-जाति को नाश कर दूँगा जिसे मैंने सृजा है," परमेश्वर ने कहा, "और इस पृथ्वी पर से उसका नाम और निशान तक मिटा दूँगा। यहाँ पर एक भी धर्मी मनुष्य नहीं, हाँ, एक भी नहीं। वे सब के सब भटक गए हैं और निकम्मे ठहरे। हाँ, केवल बुराई ही मनुष्यों के हृदय से निरन्तर निकलती रहती है।"

अतः परमेश्वर ने प्रत्येक मनुष्य के लिए मृत्यु और उसके बाद दण्ड ठहराया है। फलस्वरूप सब मनुष्य अपने जीवन भर मृत्यु के भय से दुःखी रहते हैं। उफ़! हम मनुष्य कैसे अभागे हैं।

परन्तु धन्य है वह मनुष्य, जिसके पाप ढाँपे गए हैं।

३. मुक्तिदाता आ रहा है

परमेश्वर ने मनुष्यों से प्रेम किया, तथा उनको उनकी मलिन दशा से मुक्त करने के लिए एक उपाय किया।

आज से हज़ारों वर्ष पहले अर्थात् यीशु मसीह के समय से बहुत पहले, इस्राएल के भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा परमेश्वर संसार के लोगों से बातें करने लगा।

"देखो! इस संसार का राजा* आ रहा है। वह मेघरहित आकाश में सूर्योदय के सूर्य के प्रकाश के समान होगा।

"वह पृथ्वी पर से लड़ाई-झगड़ों को हमेशा के लिए मिटा देगा और राज्य-राज्य में शान्ति स्थापित करेगा। समुद्र से समुद्र तक, पृथ्वी की प्रत्येक दिशा में उसका राज्य होगा। उसके शत्रु उसको तंग करने न पाएँगे, और न ही कुटिल उस पर अधिकार करने पाएँगे।

"मैं उसे पृथ्वी पर के समस्त राजाओं में सर्व-शक्तिशाली राजा बनाऊँगा। उसका राज्य स्वर्ग के रहने तक सदा स्थिर बना रहेगा। मैं उसे महिमा तथा विश्व के समस्त देशों पर राज्य करने का अधिकार प्रदान करूँगा, जिससे कि प्रत्येक भाषा बोलने वाले लोग उसकी आज्ञा का पालन करें। उसकी सामर्थ्य और अधिकार अनन्त हैं। उनका कभी भी अन्त नहीं होगा, और न ही उसके राज्य का पतन होगा।

* राजा—यह शब्द इब्रानी भाषा में 'मसीह' है। यह एक विशेष शब्द है जो पृथ्वी पर आने वाले परमेश्वर के राज्य के राजा को दर्शाने के लिए प्रयोग में लाया गया है। कहीं-कहीं यही शब्द 'ख्रीष्ट' (यूनानी शब्द), 'मुक्तिदाता' या 'प्रभु' के रूप में लिखा हुआ है। इस पुस्तक में इसका अनुवाद 'मसीह', 'राजा', 'मुक्तिदाता' तथा 'प्रभु' किया गया है।

"देखो! मेरे सेवक, मुक्तिदाता को देखो जिसे मैं संभाले हुए हूँ। यह मेरा चुना हुआ है जिससे मैं प्रसन्न हूँ।

"उस पर मैं अपनी आत्मा उंडेलूँगा और वह संसार की समस्त जातियों पर सत्य के वास्तविक अर्थ को प्रकट करेगा। वह हताश लोगों को साहस प्रदान करेगा और कुकर्मियों को उचित दण्ड देगा। हाँ, वह संसार में सच्चा न्याय स्थापित करेगा। जब तक कि समस्त पृथ्वी पर सच्चाई तथा धार्मिकता न फैल जाए और समुद्र पार के दूर-दूर देशों के लोग उसके उद्धार को स्वीकार न कर लें, तब तक वह चैन न लेगा।"

अनादि परमेश्वर जिसने आकाश, पृथ्वी तथा उसमें की प्रत्येक वस्तु

"ओह, मेरे चुने हुए मुक्तिदाता को देखो!"

को उत्पन्न किया, और जो प्रत्येक प्राणी को जीवन और श्वास प्रदान करता है—वही परमेश्वर अपने सेवक, उद्धारकर्त्ता के विषय में यह कहता है:

"देखो ! मैं तुम्हें एक चिन्ह देता हूँ। एक कुँआरी गर्भवती होगी और एक बालक को जन्म देगी। उसका नाम 'इम्मानुएल' (जिसका अर्थ है: 'परमेश्वर हमारे साथ') रखा जाएगा। वह एक ऐसी ज्योति ठहरेगा जो समस्त देशों के लोगों के मार्गों को प्रकाशित करेगा तथा उन्हें मेरी ओर फेरेगा।"

हाँ, हमारे लिए एक बालक उत्पन्न हुआ। हमारे लिए परमेश्वर की ओर से एक पुत्र भेजा गया है। इस संसार की राज्य-सत्ता उसी को सौंप दी जाएगी और ये उसकी राजकीय उपाधियाँ होंगी:-'अद्‌भुत परामर्शदाता', 'पराक्रमी परमेश्वर', 'सनातनकाल का पिता', 'शान्ति का राजकुमार'।

उसके सुदृढ़ तथा शान्तिमय राज्य का कभी अन्त नहीं होगा। वह पूर्ण सच्चाई तथा न्याय के साथ राज्य करेगा और संसार के समस्त राज्यों में सच्ची शान्ति तथा धार्मिकता स्थापित करेगा। और पृथ्वी परमेश्वर के ज्ञान से ऐसी भर जाएगी, जैसे समुद्र जल से भरा रहता है।

४. परमेश्वर का पुत्र

परमेश्वर के पुत्र तथा जगत के उद्धारकर्त्ता मसीह अर्थात् प्रभु यीशु की अनुपम कथा इस प्रकार आरम्भ होती है।

परमेश्वर ने एक स्वर्गदूत को मरियम नामक एक कुँआरी के पास भेजा जो इस्राएल देश के एक छोटे से कस्बे में रहती थी। मरियम की सगाई
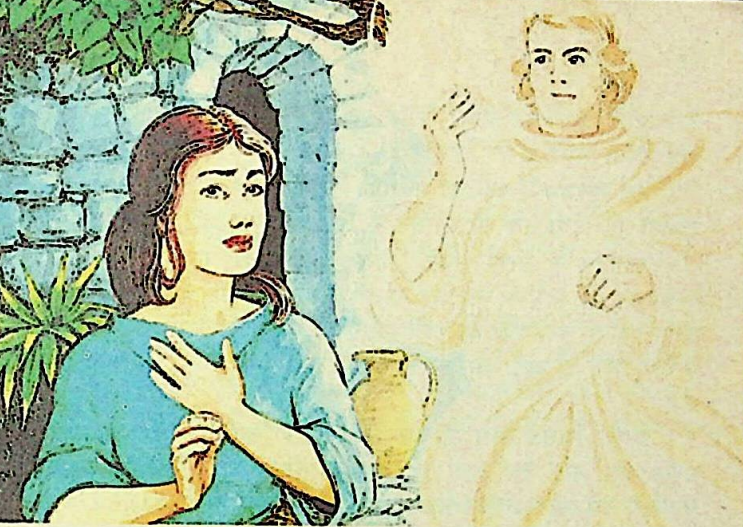
"मरियम! परमेश्वर के लिए कोई भी बात असम्भव नहीं है।"

यूसुफ़ के साथ हो चुकी थी।

स्वर्गदूत ने मरियम का अभिवादन करके कहा, "तू धन्य है! तुझ पर परमेश्वर का अनुग्रह हुआ है।"

इस अभिवादन से मरियम घबरा गई। वह विचार करने लगी कि इससे स्वर्गदूत का क्या अभिप्राय है।

स्वर्गदूत ने उससे कहा, "मरियम, भयभीत न हो। परमेश्वर ने तुझे एक अद्भुत आशिष के लिए चुना है। शीघ्र ही तू गर्भवती होगी, और एक पुत्र को जन्म देगी। तू उसका नाम 'यीशु' (उद्धारकर्त्ता) रखना। यह बालक बहुत महान होगा। जो परमेश्वर पर विश्वास करेंगे, उन सब को वह उनके पापों से मुक्त करेगा। हाँ, वह परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा। एक दिन वह

सारी पृथ्वी का राजा होगा। उसके राज्य का कभी अन्त न होगा। वह सदा-सर्वदा राज्य करता रहेगा।"

तब मरियम ने स्वर्गदूत से पूछा, "ऐसा कैसे हो सकता है? मैं एक कुँआरी हूँ। अभी तक तो मैं पति के साथ रही भी नहीं।"

स्वर्गदूत ने उत्तर दिया, "पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा और परमेश्वर की सामर्थ्य तुझ पर छाया करेगी। इसलिए वह 'पवित्र' जो उत्पन्न होगा, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा। क्योंकि हे मरियम! परमेश्वर के लिए कोई भी बात असम्भव नहीं है।" तब स्वर्गदूत वहाँ से अदृश्य हो गया।

यूसुफ़, जिसके साथ मरियम की सगाई हो चुकी थी, बड़ा ही धर्मी मनुष्य था। अतः जब उसने यह सुना कि मरियम गर्भवती है, तो उसने चुपके से उसे त्याग देने का निश्चय कर लिया, क्योंकि वह सार्वजनिक रूप से मरियम को बदनाम करना नहीं चाहता था।

जब वह इन्हीं विचारों में सो गया, तो स्वप्न में उसने एक स्वर्गदूत को अपने पास खड़ा हुआ देखा। उस स्वर्गदूत ने उससे कहा, "यूसुफ़! तू मरियम को अपनी पत्नी करके अपने यहाँ ले आने से मत डर। क्योंकि जो उसके गर्भ में है, वह पवित्र आत्मा की ओर से है। वह एक पुत्र को जन्म देगी, ताकि परमेश्वर का वह वचन, जो भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा कहा गया था, पूरा हो:– देखो! एक कुँआरी गर्भवती होगी और एक पुत्र को जन्म देगी और उसका नाम 'इम्मानुएल' रखा जाएगा।"

अतः जैसे ही यूसुफ़ नींद से जागा, उसने वैसा ही किया, जैसा कि स्वर्गदूत ने उसे आज्ञा दी थी। वह मरियम को अपनी धर्म पत्नी ग्रहण करके अपने घर ले आया। और मरियम उस बालक को जन्म देने तक कुँआरी ही रही।

उन्हीं दिनों में रोमी सम्राट कैसर औगस्तुस ने यह आज्ञा दी कि उसके सम्पूर्ण साम्राज्य में जनगणना की जाए। अतः प्रत्येक व्यक्ति को पंजीकरण के लिए अपने-अपने पूर्वजों के नगर को जाना पड़ा। अतः यूसुफ़ भी गलील के नासरत से चलकर यहूदा के नगर बैतलहम गया जो उसका पैतृक निवास स्थल था। उसने मरियम को भी अपने साथ लिया। उसके बालक जनने का समय निकट आ गया था।

अतः जब वे बैतलहम में ही थे, वहीं भविष्यद्वाणी के अनुसार उस बालक का जन्म हुआ। वह मरियम का पहलौठा पुत्र था। मरियम ने बालक को कपड़े में लपेटकर गौशाला की चरनी में रखा, क्योंकि उनके लिए उस गांव की सराय में कोई जगह खाली न थी। और यूसुफ़ ने उस बालक का नाम 'यीशु' रखा।

यीशु स्वर्ग को छोड़कर संसार में जन्मा।

५. यीशु की परीक्षा

जब यीशु लगभग तीस वर्ष का हुआ, तो वह अपना घर छोड़कर यरदन नदी की ओर गया और वहाँ उसने बपतिस्मा लिया। जब वह जल से बाहर निकला, तो एकाएक आकाश खुल गया और उसने परमेश्वर के पवित्र आत्मा को कबूतर की नाईं अपने ऊपर उतरते देखा। ठीक उसी समय यह आकाशवाणी हुई, "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ।"

इसके तुरन्त बाद ही पवित्र आत्मा यीशु को एक जंगल में ले गया ताकि वहाँ शैतान के द्वारा उसकी परीक्षा हो। वहाँ वह चालीस दिन तथा चालीस रात निराहार रहा।

और जब उसे बहुत ज़ोर से भूख लगी, तो शैतान ने उसके पास आकर उससे कहा, "यदि तू वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है, तो इन पत्थरों को आज्ञा दे कि ये रोटी बन जाएँ।"

परन्तु यीशु ने उत्तर दिया, "पवित्र-शास्त्र में यह लिखा है कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु प्रत्येक उस वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा।"

इसके पश्चात् शैतान यीशु को एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर ले गया और उसे सारे जगत का राज्य तथा उसका वैभव दिखाया। फिर शैतान ने यीशु से कहा, "यदि तू झुककर मुझे प्रणाम करे, तो मैं यह सब कुछ तूझे दे दूँगा।"

यीशु ने उसे उत्तर दिया, "हे शैतान, दूर हो! पवित्र-शास्त्र में यह लिखा है कि तू अपने सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर को प्रणाम कर और केवल उसी
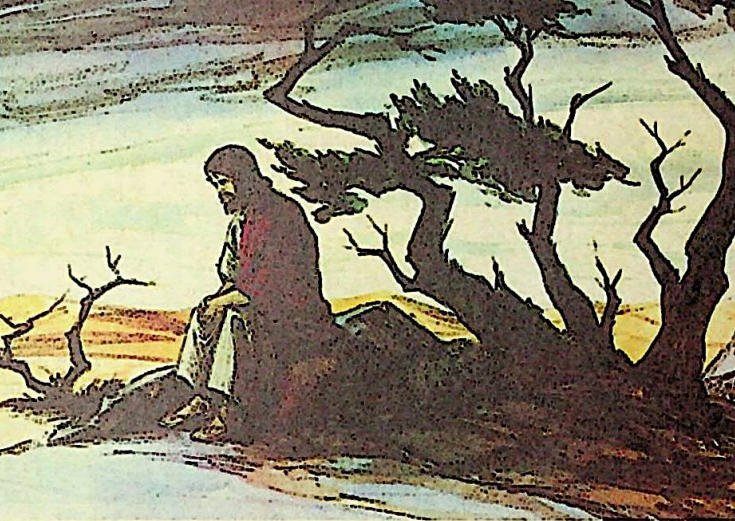
"यदि तू वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है, तो..."

की उपासना कर।"

तब शैतान उसके पास से चला गया, और स्वर्गदूत आकर उसकी सेवा करने लगे।

६. यह कैसा मनुष्य है

इसके पश्चात् यीशु लोगों को यह उपदेश देने लगा, "अपने पापों से पाश्चात्ताप करो। परमेश्वर के सुसमाचार पर विश्वास करो। परमेश्वर का राज्य निकट है!"
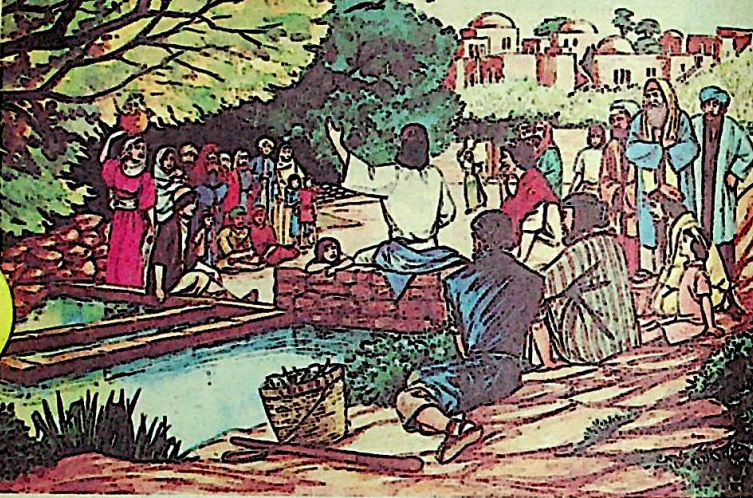
"परमेश्वर का राज्य निकट है!"

यीशु सारे गलील प्रदेश में यात्रा करते हुए, प्रत्येक जगह परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार करता रहा। और वे सब जो अनेक प्रकार की बीमारियों से पीड़ित थे, यीशु के पास आते थे, और वह उनको चंगा करता था।

शीघ्र ही उसके आश्चर्यकर्मों का समाचार गलील प्रदेश तथा उसके बाहर सीरिया तक फैल गया। तब लोग नाना प्रकार की बीमारियों तथा दुःखों से पीड़ित लोगों को, अर्थात् उनको जो दुष्टात्माओं से जकड़े हुए थे तथा मिर्गी वालों, लकवा के मारे हुओं, अंधों और लंगड़ों को, यीशु के पास लाने लगे और उसने उन सब को चंगा किया।

जहाँ कहीं यीशु जाता, एक विशाल जन-समूह जिसमें गलील प्रदेश, दशनगर क्षेत्र, यरूशलम, यहूदा प्रदेश तथा यरदन नदी के उस पार के लोग

होते थे, उसके पीछे हो लेता था।

एक दिन यीशु गलील की झील की ओर गया। इतनी बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली कि उसने अपने शिष्यों से एक नाव तैयार रखने के लिए कहा, ताकि वह उसमें बैठ जाए और भीड़ उसे दबा न सके। चूँकि यीशु ने अनेक लोगों को चंगा किया, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति यही चाहता था कि वह उसे छू ले। बहुत से बीमार उस पर टूटे पड़ रहे थे कि उसके निकट पहुँच सकें।

जब शाम हुई तो यीशु ने अपने साथियों से कहा, "आओ, हम झील के उस पार चलें।"

अत: वे भीड़ को वहीं छोड़कर और यीशु को नाव में बैठाकर, नाव खेने लगे। इतने में एक बड़ा तूफ़ान उठा और लहरें नाव पर ऐसी टकराने लगीं कि वह पानी से भरकर डूबने पर थी। परन्तु यीशु नाव के पिछले भाग में सो रहा था। शिष्यों ने घबराकर यीशु को जगाया और चिल्लाकर कहा, "हे प्रभु! नाव डूबने पर है। हमें बचा! हम डूबे जा रहे हैं!"

तब यीशु ने उठकर तूफ़ान को डाँटा तथा पानी से कहा, "शान्त रह! थम जा!! तुरन्त तूफ़ान थम गया और बड़ा चैन हो गया। उसने उनसे कहा, "तुम क्यों इतना भयभीत थे? क्या अभी भी तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं?"

जितने नाव में थे, वे सब अत्यधिक डर गए और आपस में एक-दूसरे की ओर देखकर बोले, "यह कैसा मनुष्य है, आँधी और पानी भी इसकी आज्ञा मानते हैं।"

झील को पार कर वे गन्नेसरत में पहुँचे। वे नाव को किनारे पर लगाकर उस पर से उतर गए। जो लोग वहाँ खड़े हुए थे, उन्होंने तुरन्त पहचान लिया कि वह यीशु है, और उसके आने का समाचार शीघ्र ही सारे प्रदेश में फैल गया।

और यीशु जहाँ कहीं—गाँवों, नगरों, अथवा बस्तियों में जाता, लोग बीमारों को खाटों तथा बिछौनों पर रख कर उसके पास ले आते थे। वे अपने बीमारों को गलियों और बाज़ार के चौराहों पर रखकर उससे विनती करते थे कि वह अपने वस्त्र के छोर ही को छू लेने दे, और जितने उसको छू लेते थे, सब के सब चंगे हो जाते थे।

७. यीशु का उपदेश

जब यीशु ने देखा कि जगह-जगह लोगों की भीड़-की-भीड़ उसकी प्रतीक्षा कर रही है, तो उसको उन पर तरस आया, क्योंकि वे ऐसी भेड़ों के

"क्या अभी भी तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं?"

समान थे जिनका कोई चरवाहा न हो। अतः वह उन्हें बहुत बातें सिखाने लगा जो उनके लिए अत्यन्त आवश्यक थीं।

वह उनको यह उपदेश देने लगा:

''धन्य हैं वे जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।

''धन्य हैं वे जो शोक करते हैं, क्योंकि वे शान्ति पाएँगे।

''धन्य हैं वे जो नम्र तथा सहनशील हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।

''धन्य हैं वे जो परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए लालायित रहते हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएँगे।

''धन्य हैं वे जो दया करते हैं, क्योंकि परमेश्वर उन पर दया करेगा।

''धन्य हैं वे जो अपना मन शुद्ध रखते हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।

''धन्य हैं वे जो मेल-मिलाप कराते हैं, क्योंकि वे परमेश्वर की सन्तान कहलाएँगे।

''धन्य हैं वे जो परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।

''धन्य हो तुम, जब मेरे होने के कारण तुम्हारी निन्दा मनुष्य करें और सताएँ, तथा तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की झूठी बातें कहें। आनन्दित और मगन होना, क्योंकि तुम्हारे लिए स्वर्ग में बड़ा प्रतिफल है।

''किन्तु धिक्कार है उन्हें जो इस संसार से प्रीति रखते हैं! क्योंकि वे अपना सारा सुख पा चुके।

"धिक्कार है उन्हें जो इस संसार की वस्तुओं से तृप्त हैं और लापरवाही तथा मौज-मस्ती का जीवन व्यतीत करते हैं ! क्योंकि वे शीघ्र ही भूख से रोएँगे।

"धिक्कार है उन्हें जो अब हँसते और ठट्ठा करते रहते हैं ! क्योंकि वे शोक करेंगे और छाती पीटेंगे।

"धिक्कार है उन्हें जो इस संसार में आदर और प्रतिष्ठा पाते हैं ! क्योंकि इस संसार में केवल छली और दुष्ट लोग ही प्रायः सम्मानित होते हैं।

"अपने लिए इस संसार में धन सम्पत्ति बटोरने का प्रयत्न न करो। यहाँ तुम्हारे धन को कीड़े या काई नष्ट कर देंगे, या फिर सेंध लगाकर कोई उसे चुरा ले जाएगा। तुम अपना धन स्वर्ग में इकट्ठा करो ! वहाँ किसी भी प्रकार का कीड़ा अथवा काई उसे नष्ट नहीं कर सकती, और न ही वहाँ चोरों का कोई भय होगा। क्योंकि जहाँ तुम्हारा धन है, वहीं तुम्हारा मन भी लगा रहेगा।

"कोई भी मनुष्य एकसाथ दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता। तुम भी परमेश्वर और धन दोनों की सेवा एकसाथ नहीं कर सकते।

"अतः भोजन और वस्त्र की चिन्ता बिल्कुल न करो। क्या प्राण भोजन से, और शरीर वस्त्र से बढ़कर नहीं ? तुम्हारा पिता जो स्वर्ग में रहता है, भलीभांति जानता है कि तुम्हें इन वस्तुओं की आवश्यकता है। इसलिए पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता को अपने जीवन का एकमात्र उद्देश्य बना लो, तो ये सारी वस्तुएँ भी तुम्हें दी जाएँगी।

"सावधान, सब प्रकार के लोभ से अपने आपको बचाए रखो, क्योंकि किसी का जीवन उसकी सम्पत्ति की बहुतायत से नहीं होता। क्योंकि जो कुछ इस संसार में है, वह शरीर की अभिलाषा, आँखों की अभिलाषा, और जीविका का घमण्ड है। परन्तु यह संसार और इसकी अभिलाषाएँ दोनों ही

शीघ्र नष्ट हो जाएँगी। परन्तु जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह स्वर्ग में अनन्त जीवन प्राप्त करेगा।"

"स्वर्ग जाने का द्वार बहुत सकरा है। परन्तु नरक का द्वार बहुत बड़ा है और जो मार्ग वहाँ पहुँचाता है, चौड़ा और आरामदायक है। इसीलिए अधिकांश लोग उसी मार्ग से जाते हैं। परन्तु जो लोग अनन्त जीवन में प्रवेश करना चाहते हैं, वे इस सकरे द्वार और सकरे मार्ग से होकर जाते हैं जिनमें कठिनाइयां और बाधाएं हैं। मैं सत्य कहता हूँ, बहुत थोड़े हैं जो इसे पाते हैं।

"ऐसे लोगों से सावधान रहना जो 'गुरु' कहलाते और मेरे नाम से तुम्हारे पास आते हैं। ये बाहर से तो नम्र, और भोली-भाली भेड़ के समान

"मैं सत्य कहता हूँ, बहुत कम हैं जो इसे ग्रहण करते हैं।"
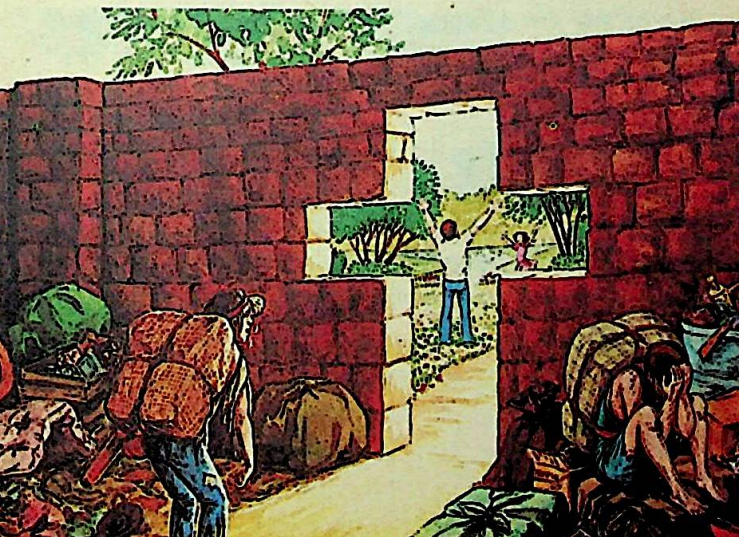
लगते हैं, परन्तु भीतर से खूँखार, फाड़ खाने वाले भेड़िये हैं। ऐसे लोगों को पहचानने का सबसे सरल उपाय उनके कार्यों के फलों पर ध्यान देना है। तुम को झाड़ियों से अंगूर, और ऊँटकटारों से अंजीर नहीं मिल सकते। अतः उनके फलों से तुम उनको पहचान लोगे।

"इस संसार के अन्त में समस्त मृतक जी उठेंगे। जिन्होंने अपना जीवन सच्चाई में व्यतीत किया। वे स्वर्ग में प्रवेश करने के अधिकारी होंगे तथा अनन्त जीवन प्राप्त करेंगे। परन्तु जिन्होंने अपना जीवन दुष्टता में व्यतीत किया, वे भी जी उठेंगे, और परमेश्वर उनका न्याय करेगा। वे सर्वदा के लिए नरक में डाले जाएंगे। वह दिन आ रहा है, जबकि प्रत्येक मृतक मेरी आवाज़ सुनेगा और जीवित हो उठेगा। और प्रत्येक अपने-अपने कार्यों कें अनुसार उचित फल पाएगा।

"स्वर्ग का द्वार मैं हूँ। जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्त जीवन प्राप्त करेगा। वास्तव में, परमेश्वर ने संसार के लोगों से इतना प्रेम किया कि उसने अपने एकलौते पुत्र (यीशु) को स्वर्ग से भेज दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो परन्तु सर्वदा जीवित रहे।"

लोग यीशु के उपदेशों से चकित हुए, क्योंकि वह किसी विद्वान की तरह नहीं सिखाता था, जिसने कहीं शिक्षा प्राप्त की हो और अब उस ज्ञान का प्रदर्शन कर रहा हो। परन्तु यीशु बड़े अधिकार के साथ शिक्षा देता था।

रात के समय यीशु अपने शिष्यों के साथ किसी एकान्त जगह पर चला जाता था और प्रार्थना में समय बिताता था।
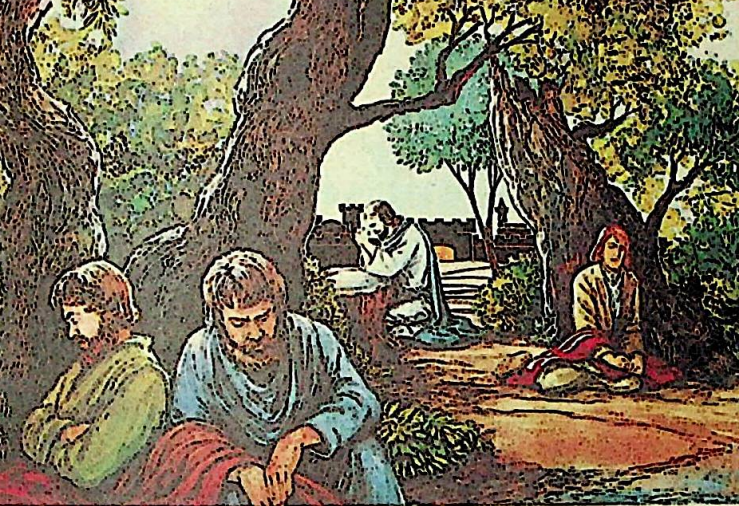
यीशु एकान्त जगह पर प्रार्थना में समय बिताता था।

८. संसार की ज्योति

एक दिन जब एक बडी भीड़ यीशु के चारों ओर एकत्रित थी, तभी याईर नाम एक मनुष्य जो आराधनालय के सरदारों में से एक था, भीड़ को चीरता हुआ वहाँ आया और यीशु के चरणों में गिर पड़ा। उसने यीशु से यह विनती की कि "मेरी बेटी मरने पर है। तू आकर उस पर अपना हाथ रख और उसे चंगा कर दे।"

अत: यीशु उसके साथ जाने लगा। एक बहुत बड़ी भीड़ भी एक-दूसरे को ढकेलते हुए उसके पीछे हो ली। ऐसा प्रतीत होता था कि यीशु कुचल जाएगा।

जब वे मार्ग में ही थे तभी याईर के घर से कुछ लोग उनसे आ मिले और उन्होंने कहा, "तेरी पुत्री अब मर चुकी है। क्या अब गुरु को कष्ट देना उचित होगा?"

परन्तु यीशु ने याईर से कहा, "डरो मत, केवल मुझ पर विश्वास रखो।" तब यीशु ने भीड़ को वहीं रुकने के लिए कहा और अपने साथ तीन शिष्यों को ले लिया। जब वे उस के घर पहुंचे तो यीशु ने लोगों को रोते-पीटते और अत्यन्त व्याकुल होते देखा। उसने लोगों से कहा, "तुम क्यों रोते-पीटते और हल्ला मचाते हो? लड़की मरी नहीं, वह तो सो रही है।"

इस पर वे सब यीशु की हँसी उड़ाने लगे। परन्तु उसने सबको बाहर निकाला। फिर वह अपने तीन शिष्यों तथा उस लड़की के माता पिता के साथ घर के भीतर गया जहाँ लड़की पड़ी थी।

उसके हाथ को पकड़कर यीशु ने कहा, "हे लड़की, मैं तुझ से कहता हूँ, उठ!" और लड़की उठ खड़ी हुई तथा कमरे में चलने-फिरने लगी। वह बारह वर्ष की थी। यह देखकर प्रत्येक व्यक्ति आश्चर्य से भर गया।

तब यीशु ने उन्हें चिताकर आज्ञा दी कि यह बात कोई जानने न पाए और माता-पिता से कहा, "उसे कुछ खाने को दो।"

तब भीड़ से यीशु ने कहा, "जो कुछ मैं कहता हूँ, उसे ध्यान से सुनो। मैं ही पुनरुत्थान हूँ और मैं ही जीवन हूँ। जो मुझ पर विश्वास रखते हैं, मैं दृढ़ता से कहता हूँ, वास्तव में वे कभी नहीं मरेंगे।"

परमेश्वर की इस सामर्थ्य को देखकर लोगों में बड़ा भय छा गया। जो आश्चर्यकर्म यीशु ने किए थे, उनके विषय में लोगों में तरह-तरह की चर्चाएँ होने लगीं। परन्तु यीशु ने अपने शिष्यों को अलग ले जाकर उनसे कहा,
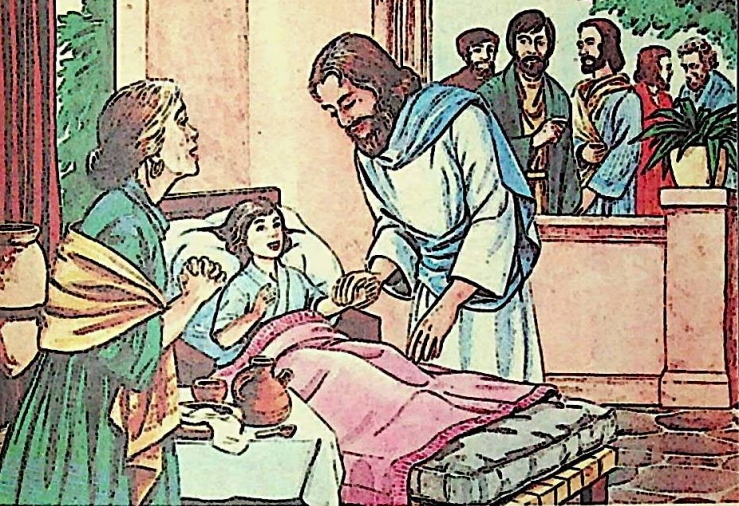
यीशु ने मृतक लड़की को भी जीवन-दान दिया।

"सुनो, हम यरूशलम जा रहे हैं। वहाँ पहुँचने पर मैं यहूदी अगुवों के हाथों पकड़वाया जाऊँगा। वे मुझे मृत्युदण्ड के योग्य ठहराएँगे, मेरा उपहास करेंगे, मुझ पर थूकेंगे, कोड़े मारेंगे और अन्त में मुझे मार डालेंगे। परन्तु मैं तीसरे दिन मृतकों में से पुनः जीवित हो उठूँगा।"

परन्तु यीशु की इन बातों का अर्थ उनमें से एक भी शिष्य न समझ सका, फिर भी वे उससे पूछने से डरते थे।

यरूशलम के ही मार्ग पर एक और घटना घटी: यीशु एक बड़ी भीड़ के आगे-आगे चल रहा था, और वे यरीहो नगर में होकर निकले। जैसे ही वे नगर के बाहर थोड़ी दूर गए, कि वहाँ बरतिमाई नामक एक अंधा भिखारी सड़क के किनारे बैठा हुआ था।

"अन्त में धार्मिक नेता लोग मुझे मार डालेंगे।"

जब उस भिखारी ने आती हुई भीड़ का शोर सुना तो पूछने पर उसे मालूम हुआ कि यीशु जा रहा है। वह तुरन्त चिल्लाने लगा, "हे यीशु, इस्राएल के राजा, मुझ पर दया कर!"

भीड़ के लोग उसे डाँटने-फटकारने लगे, "चुप रह, अपना मुँह बन्द रख!"

परन्तु बरतिमाई और भी अधिक चिल्लाता रहा, "हे इस्राएल के राजा! मुझ पर दया कर!"

जब यीशु ने उसे इस प्रकार चिल्लाते सुना, तो उसने रुककर अपने शिष्यों से कहा, "उसे मेरे पास ले आओ।"

अतः उन्होंने उस अंधे को बुलाया, "आ जल्दी कर! वह तुझे बुला

रहा है।"

अपने कपड़े फेंककर बरतिमाई उछल पड़ा और यीशु के पास आया।

यीशु ने उससे पूछा, "तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिए करूं?"

अंधे ने कहा, "हे प्रभु, मैं देखना चाहता हूँ!"

तब यीशु ने उससे कहा, "ठीक है, देखने लग! तेरे विश्वास ने तुझे चंगा कर दिया है।" और बरतिमाई तुरन्त देखने लगा, और भीड़ में सम्मिलित होकर यीशु के साथ चलने लगा।

फिर यीशु ने लोगों से कहा, "मैं जगत की ज्योति हूँ। जो मेरे पीछे चलेगा, वह अंधकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा। वास्तव में, मैं इस संसार में न्याय के लिए आया हूँ, कि जो नहीं देखते, वे देखें और जो देखते हैं वे अंधे हो जाएँ।"

९. यीशु का बन्दी होना

यीशु को अपने शिष्यों के साथ इस्राएल के गाँवों और नगरों में घूमकर लोगों को स्वर्ग के राज्य और परमेश्वर के उद्धार का संदेश सुनाते हुए लगभग तीन वर्ष हुए।

उसने रोगियों को चंगा किया, और मृतकों को भी जीवित कर दिया। उसने इस संसार के शीघ्र विनाश, तथा परमेश्वर के नए संसार के स्थापित होने की भविष्यद्वाणी करते हुए हर जगह उपदेश दिया। फलस्वरूप बड़ी संख्या में लोग उस पर विश्वास करने लगे कि युगों पूर्व भविष्यद्वक्ताओं द्वारा प्रतिज्ञा किया हुआ उद्धारकर्त्ता मसीह यही है।

परन्तु उस देश के मुखिए, धार्मिक अगुवे, बुद्धिजीवी तथा

अधिकारीगण डर गए और यीशु से घृणा करने लगे। वे यह जानते थे कि वास्तव में यह परमेश्वर का पुत्र है, फिर भी उनमें इस बात की तनिक भी इच्छा नहीं थी कि वे अपने पापों से पश्चात्ताप करके उसे स्वीकार कर लें।

अंत में उन्होंने यीशु को गिरफ़्तार करके उस पर मुकदमा चलाया।

यहूदी पंथ के मुख्य पुरोहित, तथा सर्वोच्च यहूदी महासभा के समस्त सदस्य उस पर मुकदमा चलाने के लिए एकत्रित हुए। उनका उद्देश्य यही था कि वे उसे मार डालें। यद्यपि यीशु के विरुद्ध उन्होंने अनेक झूठी गवाहियाँ एकत्रित कर ली थीं, फिर भी उनसे कहीं अधिक साक्षियाँ यीशु के पक्ष में थीं। और उनकी झूठी गवाहियों में तो इतना विरोधाभास था कि वे किसी ठोस परिणाम पर नहीं पहुंच सके कि यीशु पर दोष लगाएँ।

इस पूरे मुकदमे में यीशु ने एक भी शब्द नहीं कहा।

अंत में मुख्य पुरोहित खड़ा हुआ और उसने पूछा, "तुझे अपने विषय में क्या कहना है? क्या तू वास्तव में परमेश्वर का पुत्र होने का दावा करता है? क्या तू मसीह अर्थात् जगत का उद्धारकर्त्ता है? स्पष्ट उत्तर दे!"

यीशु ने उत्तर दिया, "हाँ, तू बिल्कुल ठीक कहता है। सुनो, शीघ्र ही तुम मुझे सामर्थ्य और परमेश्वर के सम्पूर्ण अधिकार के साथ बादलों पर आते हुए देखोगे।"

जैसे ही मुख्य पुरोहित ने यह सुना, वह क्रोध के मारे चिल्ला उठा, "निन्दा! सरासर परमेश्वर की निन्दा! अब तुम सब इस मनुष्य के लिए क्या कहते हो?"

"मृत्यु!" वे सब एक स्वर में चिल्लाए।

"इसे मार डालो!"

वे यीशु को न्यायाधीश पिलातुस के पास ले गए। पिलातुस ने यीशु से

पूछा, "क्या तू यहूदियों का राजा है?"

यीशु ने उत्तर दिया, "हाँ, मैं राजा हूँ। परन्तु मेरा राज्य इस संसार का नहीं। यदि मैं इस संसार का राजा होता, तो मेरे अनुयायी मुझे बचाने के लिए लड़ते। मैं इसलिए उत्पन्न हुआ और संसार में आया कि सत्य की गवाही दूँ। जो सत्य के प्रेमी हैं, वे सब मेरी सुनेंगे।"

तब पिलातुस ने लोगों के सामने आकर कहा, "मैं तो उसमें कोई दोष नहीं पाता।" परन्तु लोगों ने उसकी बात नहीं सुनी।

पिलातुस ने यीशु पर कोड़े लगवाने का आदेश दिया। सिपाहियों ने काँटों का एक मुकुट गूँथकर यीशु के सिर पर जड़ दिया और उसे एक बैंजनी वस्त्र पहनाया। वे उसकी हँसी उड़ाने लगे। "अहा हा...परमेश्वर के पुत्र,

"यह परमेश्वर का पुत्र होने का दावा करता है।"
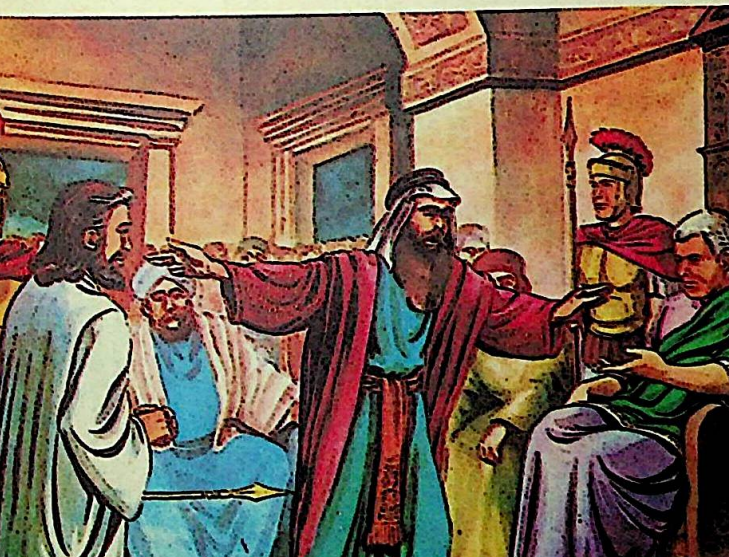
संसार के राजा! प्रणाम! प्रणाम!!" वे उस पर खूब हँसे। उन्होंने उस पर थूका तथा उसके मुँह पर थप्पड़ भी मारे।

पिलातुस यीशु को रिहा करना चाहता था। इसलिए उसने यीशु को लोगों को सामने लाकर कहा, "इस मनुष्य को देखो!"

यीशु को देख भीड़ क्रोध से चिल्लाने लगी, "उसका काम तमाम करो! उसे क्रूस पर चढ़ाओ! क्रूस पर!"

पिलातुस ने उत्तर दिया, "तुम ही उसे क्रूस पर चढ़ाओ। मैं उसमें कोई दोष नहीं पाता।"

पिलातुस के इस उत्तर से वे और भी भड़क उठे। वे क्रुद्ध होकर पुनः चिल्ला पड़े, "हमारी भी एक व्यवस्था है, और उस व्यवस्था के अनुसार यह

"अहा हा... परमेश्वर के पुत्र, प्रणाम!"
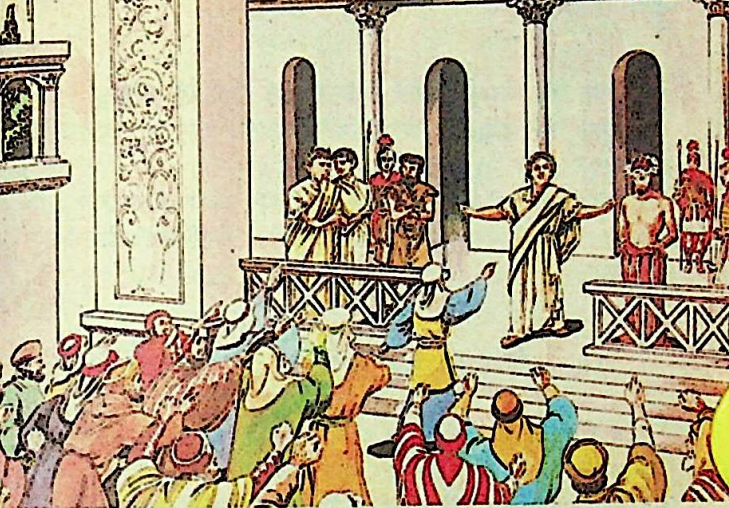
"उसे क्रूस पर चढ़ा दो! उसे क्रूस पर चढ़ा दो!"

मनुष्य मारे जाने के योग्य है। क्योंकि यह अपने को परमेश्वर का पुत्र होने का दावा करता है।"

जब पिलातुस ने यह सुना, तो वह और भी घबरा गया। उसने यीशु को अन्दर ले जाकर उस से पूछा, "मुझे बता कि तू कहाँ का है?"

यीशु ने उत्तर दिया, "यदि परमेश्वर ही तुझे अधिकार न देता तो मेरे ऊपर तेरा कोई भी अधिकार नहीं होता। इसलिए जिन्होंने मुझे तेरे हाथों में सौंपा है वे अधिक दोषी हैं।"

पिलातुस ने फिर यीशु को छोड़ देने का प्रयत्न किया, क्योंकि वह जानता था कि यहूदी अगुवों ने उसे ईर्ष्या तथा घृणा के कारण पकड़वाया है।

एक बार फिर वह भीड़ की ओर मुड़ा और कहा, "मैंने इस मनुष्य को

भली-भाँति जाँच लिया है और मैं इसमें कोई दोष नहीं पाता।"

परन्तु सारी भीड़ ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगी, "उसे क्रूस पर चढ़ाओ, क्रूस पर!"

जब पिलातुस ने देखा कि अब कुछ नहीं बन पड़ता, बल्कि हुल्लड़ ही होता जा रहा है, तो उसने यीशु को उनके हाथों में सौंप दिया कि वे उसे क्रूस पर चढाएँ।

१०. यीशु का लहू पापों को शुद्ध करता है

वे यीशु को पकड़कर बाहर ले गए और उसके कंधे पर क्रूस लाद दिया। फिर उसे सड़कों से खींचकर शहर के बाहर एक स्थान पर ले आए जिसे इब्रानी भाषा में 'गुलगुथा" कहते हैं (जिसका अर्थ 'खोपड़ी' है)। वहाँ उन्होंने यीशु के साथ उसकी दाईं और बाईं ओर दो डाकुओं को भी क्रूस पर चढ़ा दिया।

जब उन्होंने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया, यीशु ने यह प्रार्थना की, "हे स्वर्गीय पिता, इन्हें तू क्षमा कर। क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं।"

जब लोग खड़े हुए देख रहे थे, सिपाहियों ने यीशु के वस्त्रों के लिए चिट्ठियाँ डालीं कि कौन-सा कपड़ा किसका होगा। यहूदी अगुवे भी वहाँ खड़े होकर यीशु का उपहास कर रहे थे, "इस मनुष्य ने औरों को तो बचाया। परन्तु अब देखें कि यदि वह वास्तव में परमेश्वर का चुना हुआ उद्धारकर्त्ता है, तो अपने आपको भी बचा पाता है या नहीं?

"हे दूसरों को बचाने वाले, पहले अपने आपको बचाकर हमें दिखा!

यदि तू क्रूस पर से उतर आए तो हम सब तुझ पर विश्वास कर लेंगे।"

यरूशलम की सड़कों पर चलने वाले लोग भी उस पर हँसते और उसका ठट्ठा करते थे। "ज़रा उस उद्धारकर्त्ता को तो देखो," वे ठहाके मारकर कहते, "हे परमेश्वर के पुत्र, देख, यदि तू इतना ही चमत्कारी है, तो क्रूस पर से नीचे उतर आ और स्वयं को बचा ले!"

यहाँ तक कि यीशु के पास क्रूस पर लटका हुआ एक डाकू भी यीशु का ठट्ठा करके उससे कहने लगा, "क्या तू मसीह नहीं है ? तो फिर हमें और अपने आपको भी बचा ले।"

परन्तु दूसरे डाकू ने उसका विरोध करते हुए कहा, "तू मरते समय भी

उन्होंने यीशु को क्रूस पर कीलों से जड़ दिया।
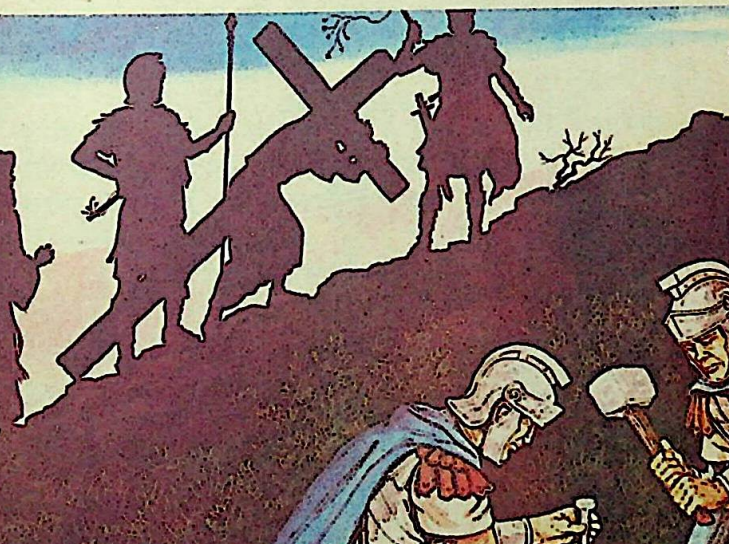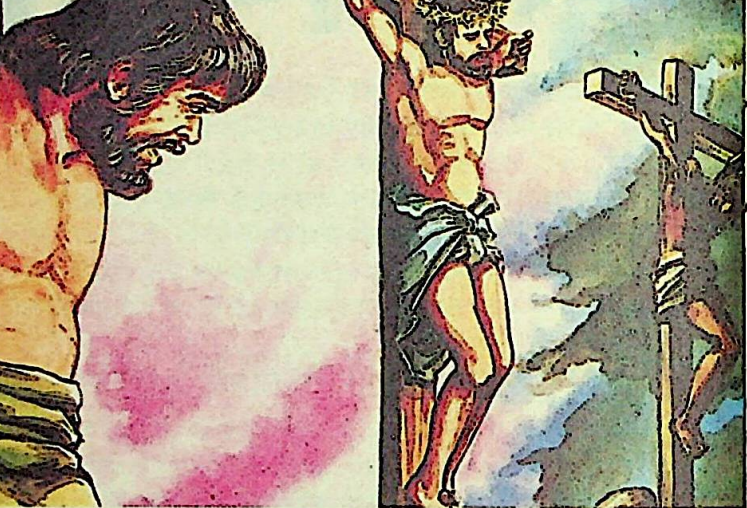
"हे यीशु, कृपया मेरी भी सुधि लेना!"

परमेश्वर से नहीं डरता? हम तो अपने किए का दण्ड भोग रहे हैं, परन्तु इस मनुष्यं ने तो कोई भी अपराध नहीं किया है।" तब उसने यीशु की ओर मुड़कर कहा, "यीशु, जब तू अपने राज्य में आए तो मुझे भी स्मरण करना।"

यीशु ने उसे उत्तर दिया, "मैं तुझे वचन देता हूँ कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गीय राज्य में होगा।"

दोपहर के लगभग बारह बजे एकाएक सारी पृथ्वी पर अंधकार छा गया, और लगभग तीन घंटे तक छाया रहा।

लगभग तीन बजे यीशु ऊँचे स्वर से पुकार उठा, "हे मेरे परमेश्वर!

हे मेरे परमेश्वर! तूँने मुझे क्यों छोड़ दिया?"

जो वहाँ पास खड़े थे, इस आवाज़ से डर गए। यीशु ने फिर ज़ोर से कहा, "पूरा हुआ!" और उसने अपना प्राण छोड़ दिया। तब एक बड़ा भूकम्प हुआ, पृथ्वी काँप उठी और पहाड़ियाँ तड़क गईं। पास में ही खड़े सिपाही इस भूकम्प तथा जो कुछ वहाँ घटा था, उससे भयभीत हो उठे। वे विस्मित होकर कहने लगे, "सचमुच यह परमेश्वर का पुत्र था।"

परमेश्वर ने हमसे कितना महान प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र हमारे लिए दे दिया। यद्यपि मसीह के द्वारा ही इस समस्त संसार की रचना की गई थी, परन्तु जब वह इस पृथ्वी पर आया तब बहुत ही कम

"सचमुच यह परमेश्वर का ही पुत्र था!"

लोगों ने उसे सहर्ष स्वीकार किया।

उस पर इतने कोड़े बरसाए गए कि वह लहूलुहान हो गया। परन्तु बहुत ही थोड़े से लोगों ने उस पर विश्वास किया। उसकी कुछ भी सुन्दरता न थी कि मनुष्य उसे देखते। हाँ, हमने उसको तुच्छ जाना और ठुकरा दिया। हमने उसकी ओर से अपना मुख फेर लिया। जब उसे क्रूस पर दु:ख दिया जा रहा था, तो हमने इसको हल्की सी बात समझा।

परन्तु मसीह का मरना तो हमारे ही बदले में था। और उंसी के कोड़े खाने से हमने अपने पापों से क्षमा पाई। सम्पूर्ण मानव-जाति परमेश्वर से दूर होकर उससे अलग हो गई है। हम तो केवल अपने ही विषय में सोचते

उसके मार खाने से ही, हमें अपने पापों की क्षमा मिली।
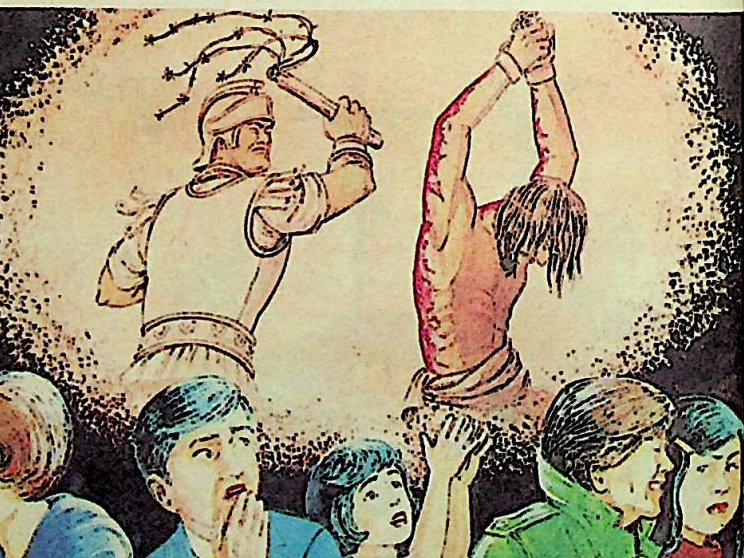
हैं। फिर भी परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के लहू ने हमें हमारे सभी पापों से शुद्ध किया है। जो यीशु को मसीह (उद्धारकर्त्ता) करके ग्रहण करता और उस पर विश्वास करता है, वह परमेश्वर की संतान होने का अधिकार पाता है।

जब संध्या हुई तो एक सज्जन ने पिलातुस के पास जाकर यीशु का शव माँगा। तब उसने यीशु के मृत शरीर को क्रूस पर से उतारकर मलमल के कपड़े में लपेटा और पास की एक गुफ़ा में जो क़ब्र के रूप में चट्टान काटकर बनाई गई थी, रखकर उसके मुँह पर एक बड़ा पत्थर लुढ़का दिया।

दूसरे ही दिन मुख्य पुरोहित तथा शास्त्रियों ने पिलातुस के पास जाकर उससे कहा, ''अभी-अभी हमें स्मरण आया है कि उस भरमाने वाले यीशु ने अपने जीते जी कहा था कि वह तीसरे दिन मुर्दों में से जीवित हो उठेगा। इसलिए यदि कहीं उसके चेले उसके शव को चुरा लें और कहें कि यीशु पुनः जीवित हो गया है तो हम पहले की अपेक्षा अधिक संकट में पड़ जाएँगे। कहीं ऐसा न हो जाए। इसलिए हमारी आपसे विनती है कि आप आज्ञा दें कि तीन दिन तक उसकी क़ब्र पर भारी पहरा लगा दिया जाए।''

पिलातुस ने उत्तर दिया, ''तुम्हारे पास पहरेदार तो हैं, उनको ले जाओ और जैसा उचित समझो, क़ब्र पर पहरा दो।''

अतः उन्होंने जाकर क़ब्र को अच्छी तरह बन्द करके उस पर सरकारी मुहर लगा दी, और वहाँ सैनिकों को तैनात कर दिया कि कोई दूसरा व्यक्ति वहाँ न आने पाए।

उन्होंने कब्र को सरकारी मुहर लगाकर बन्द कर दिया।

११. यीशु मृतकों में से जी उठा

यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने के तीसरे दिन भोर को जब दिन निकल ही रहा था, कुछ स्त्रियाँ यीशु की कब्र पर गईं।

एकाएक वहाँ एक बड़ा भूकम्प आया और परमेश्वर के एक दूत ने स्वर्ग से आकर कब्र के मुँह पर रखे उस बड़े पत्थर को एक ओर लुढ़का दिया और स्वयं उस पर बैठ गया। उसका चेहरा बिजली का-सा, तथा उसका वस्त्र हिम के समान श्वेत था। जब पहरेदारों ने उसे देखा तो वे भय से काँप उठे और उनके चेहरे पीले पड़ गए।

तब स्वर्गदूत ने उन स्त्रियों से कहा, "डरो मत। मैं जानता हूँ कि तुम उस यीशु को जो क्रूस पर चढ़ाया गया था, ढूँढ रही हो। परन्तु वह यहाँ नहीं है। वह तो अपने वचन के अनुसार पुनः जीवित हो उठा है! भीतर आकर उस स्थान को देखो जहाँ उसका शव रखा हुआ था।

"अब शीघ्र जाकर तुम उसके शिष्यों को बताओ कि यीशु मृतकों में से जीवित हो उठा है। अब वह तुमसे वहाँ मिलेगा, जहाँ उसने तुमसे मिलने का वचन दिया था।"

"क्या तुम्हारी समझ में आ गया? यीशु फिर जी उठा है! वह अब क़ब्र में नहीं है। क्या तुम्हें स्मरण नहीं? जब वह तुम्हारे साथ था, तभी

"अपने वचन के अनुसार वह जी उठा है।"
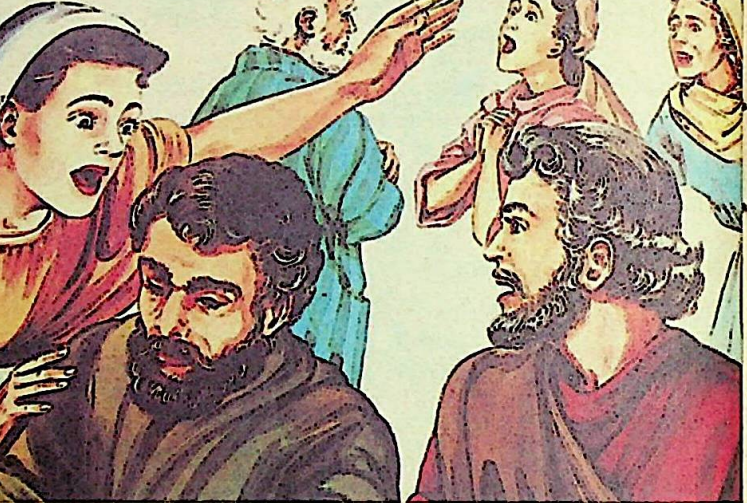
ये बातें उन्हें दन्तकथा सी लगीं।

उसने बता दिया था कि—'मुक्तिदाता दुष्टों के हाथों पकड़वाया जाएगा, वह क्रूस पर चढ़ाया जाएगा, और तीसरे दिन फिर जी उठेगा'।" जब दूत ने यह कहा तो उन स्त्रियों को यीशु के वचन स्मरण आए।

तब वे भयभीत होकर बड़े आनन्द के साथ फुर्ती करके क़ब्र से नगर की ओर दौड़ीं कि जाकर शिष्यों को सब कुछ बता दें। जब वे लौट ही रही थीं कि यीशु अचानक उनके सामने आ खड़ा हुआ और कहा, "तुम्हें शान्ति मिले!" तब वे स्त्रियाँ उसके निकट आईं और उसके पैरों पर गिरकर उसको दण्डवत् किया।

यीशु ने उनसे कहा, "डरो मत। शीघ्र जाकर मेरे भाइयों को यह बताओ कि मैं उनसे गलील में मिलूँगा। वे गलील पहुँच जाएँ।"

अतः उन स्त्रियों ने पहुँचकर यीशु के शिष्यों तथा अन्य लोगों से जो उनके साथ थे, वह पूरा हाल कह सुनाया जो सुबह घटा था। परन्तु ये बातें उन्हें केवल दंतकथा सी लगीं। उन्होंने उन पर विश्वास नहीं किया।

फिर भी यीशु के दो शिष्य—पतरस और यूहन्ना उठकर क़ब्र की ओर दौड़े। क़ब्र में देखने पर उन्होंने पाया कि वह सफेद मलमल का कपड़ा, जिसमें यीशु का शव लिपटा हुआ था, वहीं पर पड़ा हुआ है। वहाँ जो कुछ घटना घटी, उस पर आश्चर्य करता हुआ पतरस अपने घर वापस चला गया। परन्तु यूहन्ना ने खाली क़ब्र को देखकर विश्वास किया।

जिस समय वे स्त्रियाँ नगर में दौड़ी जा रही थीं तब कुछ पहरेदार जो क़ब्र की रखवाली कर रहे थे, उन्होंने नगर में आकर पूरा-पूरा हाल मुख्य पुरोहितों को कह सुनाया। तुरन्त पुरोहितों और अगुवों की सभा बुलाई गई और यह तय किया गया कि सिपाहियों को घूस देकर उनसे यह कहलवाया जाए कि जब वे रात को सो रहे थे तो यीशु के शिष्य आकर उसके शव को चुरा ले गए।

मुख्य पुराहितों ने पहरेदारों को वचन देते हुए कहा, "यदि यह बात राज्यपाल के कानों तक पहुँचे, तो हम हर प्रकार से तुम्हारा साथ देंगे, और सब कुछ ठीक हो जाएगा।" अतः सिपाहियों ने घूस स्वीकार की और उस कहानी को लोगों में फैला दिया।

उसी दिन, रविवार की शाम को, यीशु के शिष्य एक कमरे में एकत्रित थे। यहूदियों के डर से उन्होंने अपने घर के दरवाज़ों को बन्द कर रखा था। उसी समय एकाएक यीशु वहाँ पर उनके बीच में आ उपस्थित हुआ। उसने कहा, "तुम्हें शान्ति मिले!"

शिष्य यह जानकर कि वे किसी प्रेतात्मा को देख रहे हैं, अत्यन्त डर गए। यीशु ने कहा, "तुम इतने भयभीत क्यों हो ? तुम्हें क्यों इतना सन्देह हो रहा है ? देखो, मेरे हाथ तथा पाँवों के घावों को देखो ! वास्तव में यह मैं ही हूँ! मुझे छूकर स्वयं देख लो। मैं प्रेतात्मा नहीं हूँ। प्रेतात्मा के हड्डी और माँस नहीं होते।" यह कहते हुए उसने तुरन्त अपने हाथ उनकी ओर किए कि वे उसके हाथों में कीलों के चिन्ह को देखें। और उसने उन्हें अपने पाँवों के घाव भी दिखाए। तब चेले प्रभु को देखकर आनन्दित हुए।

एक अन्य अवसर पर यीशु ने अपने चेलों को झील के किनारे दर्शन दिए और उसने अपने चेलों से पूछा, "क्या तुम्हारे पास खाने के लिए कुछ है ?" उन्होंने उसे भुनी हुई मछली का एक टुकड़ा दिया, और उसने उसे

"मुझे छूकर देखो ! मैं कोई प्रेतात्मा नहीं हूँ।"
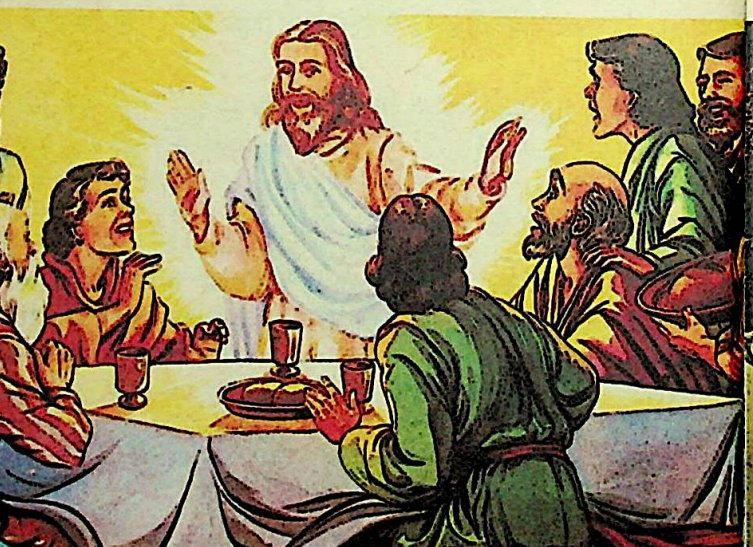
लेकर उनके सामने खाया।

१२. सम्पूर्ण विश्व के लिए

यीशु ने कहा, ''हाँ, भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा कहे गए वे वचन पवित्र-शास्त्र में बहुत पहले से ही लिखे गए हैं कि मुक्तिदाता मसीह दुःख उठाएगा, मारा जाएगा और दफ़नाया जाएगा। परन्तु वह तीसरे दिन फिर जी उठेगा और उद्धार का यह सुसमाचार यरूशलम से लेकर सम्पूर्ण विश्व में प्रचार किया जाएगा।

''अब स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए

''यह सुसमाचार सम्पूर्ण विश्व के लोगों में प्रचार करो।"
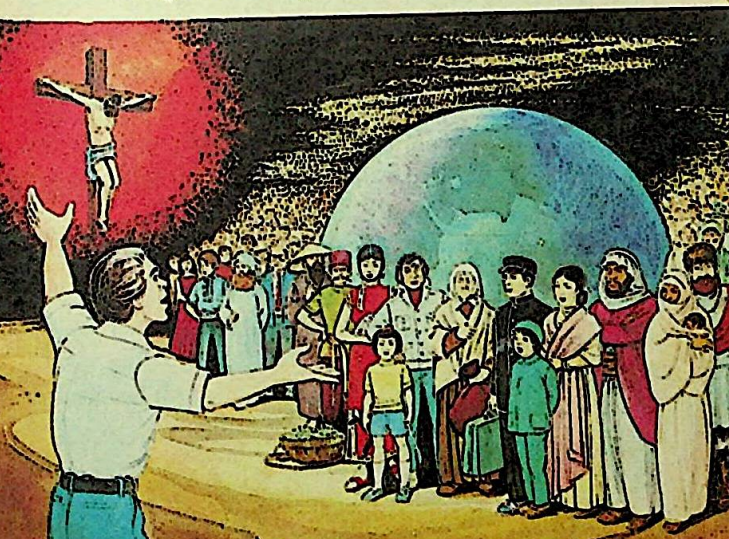
तुम जाओ और सब देशों में लोगों को शिष्य बनाओ और उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में बपतिस्मा दो। और जो आज्ञाएँ मैंने तुम्हें दी हैं उन सबको उन्हें भी मानना सिखाओ।"

इस पुस्तक में जो यीशु के आश्चर्यकर्मों का वर्णन है, इसके अतिरिक्त और भी बहुत से अद्भुत कार्य यीशु के शिष्यों ने देखे। परन्तु जिन अद्भुत चिन्हों का वर्णन इस पुस्तक में है वह इसलिए है कि तुम भी विश्वास करो कि वास्तव में यीशु ही परमेश्वर का पुत्र और संसार का मुक्तिदाता है, और विश्वास करने से तुम भी अनन्त जीवन प्राप्त करो।

मृतकों में से जी उठने के बाद चालीस दिनों तक यीशु अपने शिष्यों पर बार-बार प्रकट होता रहा। अनेक प्रमाणों से वह सिद्ध करता रहा कि वास्तव में वह जीवित है। वह उन्हें परमेश्वर के राज्य के विषय में भी शिक्षा देता रहा।

यीशु ने उन्हें चेतावनी दी, "मुझ पर विश्वास करने के कारण प्रत्येक मनुष्य तुमसे घृणा करेगा, परन्तु जो अंत तक अपने विश्वास में दृढ़ बना रहेगा, वह उद्धार पाएगा। जो कोई अपने मित्रों तथा अन्य लोगों के सामने यह मान लेगा कि वह मुझ पर विश्वास करता है, तो मैं भी उसे अपने स्वर्गिक पिता के सामने मान लूँगा कि यह व्यक्ति मेरा है। परन्तु यदि कोई दूसरों के सामने मुझे अस्वीकार करेगा, तो मैं भी उसे अपने स्वर्गिक पिता के सामने स्वीकार करने से मना कर दूँगा।"

इसके बाद यीशु अपने शिष्यों को यरूशलम के बाहर एक पहाड़ी पर ले गया, और तब वहाँ उसने उनको यह अन्तिम आज्ञा दी, "जाओ, संसार के प्रत्येक राज्य एवं जाति के लोगों को यह सुसमाचार सुनाओ। जो कोई परमेश्वर के सामने अपने पापों से पश्चात्ताप कर मुझ पर विश्वास करे और बपतिस्मा ले, उसका उद्धार होगा। परन्तु जो मुझ पर विश्वास नहीं

जब तक कि वह बादलों से ओझल न हो गया, वे टकटकी लगाए रहे।

करेंगे, वे दोषी ठहराए जाएँगे तथा अपने पापों में मरेंगे। मृत्यु के पश्चात् परमेश्वर उन्हें दण्ड देगा।"

जब वह यह सब कह चुका तो उसने अपने हाथ ऊपर उठाकर उन्हें आशिष दी। जब वे उसकी ओर देख ही रहे थे तो उनके देखते-देखते वह स्वर्ग में ऊपर उठा लिया गया और बादलों ने उसे उनकी आँखों से छिपा लिया। उसके जाते समय जब वे आकाश की ओर ताक रहे थे, तो देखो, दो स्वर्गदूत उन्हें दिखाई दिए और कहने लगे, "जिस रीति से तुमने यीशु को स्वर्ग पर जाते हुए देखा है, उसी रीति से वह फिर आएगा।"

तब जैसा कि यीशु ने अपने शिष्यों को आज्ञा दी थी, वे प्रत्येक जगह जाकर इस अद्‌भुत सुसमाचार का प्रचार करने लगे।

१३. सब कुछ नया

मसीह यीशु ने प्रतिज्ञा की थी कि वह एक बार फिर इस संसार में अवश्य आएगा। तब इस संसार का अन्त हो जाएगा।

जब वह आकाश के बादलों के साथ आएगा तो प्रत्येक आँख उसे देखेगी। और उसको देखकर पृथ्वी के सारे लोग छाती पीटेंगे। सब मृतक जीवित हो उठेंगे, और जीवित लोगों के साथ वे भी यीशु के सामने खड़े किए जाएँगे।

सभी मनुष्य, चाहे वे उच्च वर्ग के हों, अथवा निम्न वर्ग के, सब का न्याय उसके कर्मों के अनुसार किया जाएगा। प्रत्येक काम, छिपा हुआ काम

मृतक तथा जीवित सभी यीशु के सामने खड़े होंगे।
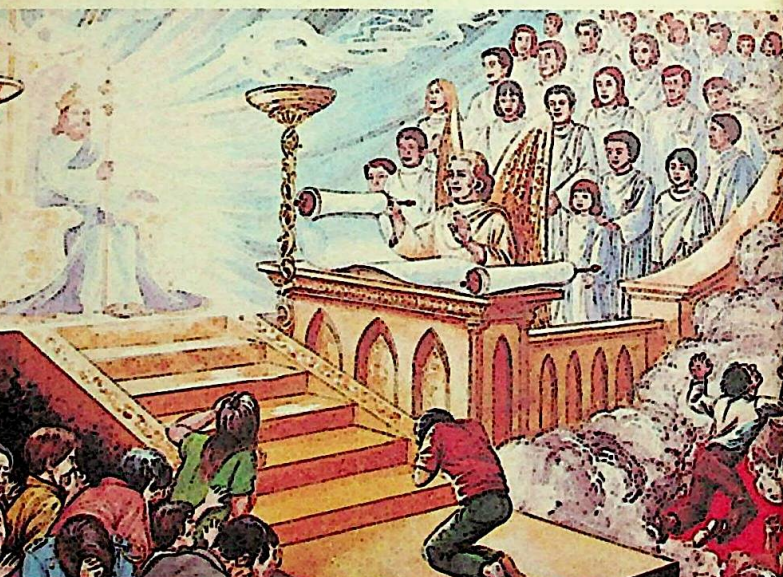
यह पृथ्वी जलकर ऐसी नष्ट हो जाएगी कि कुछ भी शेष न रहेगा।

भी उस दिन प्रकाश में लाया जाएगा, और प्रत्येक मनुष्य व्यक्तिगत रूप से अपने भले-बुरे कर्मों के अनुसार प्रतिफल पाएगा।

तब हम एक नया आकाश और एक नई पृथ्वी देखेंगे। वर्तमान संसार और यह सृष्टि सब आग से नष्ट और लुप्त हो जाएँगे। उस दिन यह सृष्टि मानो अग्नि का गोला बन जाएगी, और यह पृथ्वी तथा जो कुछ उसमें है ऐसे भयंकर ताप से, जो कल्पना से परे है, तप्त होकर पिघल जाएगी। हाँ, यह आकाश भी एक भयंकर हड़हड़ाहट के साथ लुप्त हो जाएगा। यह पृथ्वी जलकर भस्म हो जाएगी और इसका नाम व निशान तक बचा न रहेगा।

परन्तु हम जो परमेश्वर पर विश्वास रखते हैं, हमारी आशा इस संसार पर नहीं। हमने तो अपनी सारी आशा उस नई पृथ्वी और उस नए

आकाश पर लगा रखी है जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने की है। और इस नई पृथ्वी और इस नए आकाश को देखने वाले केवल वे ही लोग होंगे जो अपने पापों से शुद्ध किए जा चुके हैं।

यीशु ने कहा, "देखो! मैं सब कुछ नया कर देता हूं। परमेश्वर स्वयं मनुष्यों के साथ निवास करेगा और मनुष्य परमेश्वर के पुत्र बन जाएंगे। और मैं उनकी आँखो से सब आँसू पोंछ डालूँगा। वहाँ फिर कोई मृत्यु न होगी, और न कोई दुःख, न शोक-विलाप, न पीड़ा, और न चिंता होगी। मेरे वचन सत्य एवं विश्वास-योग्य हैं। जो मनुष्य इस संसार की बुराइयों पर विजय प्राप्त करता है, और मुझ पर विश्वास करता है, अन्त में वही उस परमानन्द में सहभागी होगा।

"परन्तु वे जो मुझ पर विश्वास करने से लजाते हैं, और वे जो बुराई से प्रीति रखते, अनैतिकता में जीवन बिताते, जादू-टोना करते, जो परमेश्वर की आराधना करने की अपेक्षा मृतकों तथा अन्य मूर्तियों की उपासना करते तथा सब झूठ बोलने वाले—उन सब का निश्चित प्रतिफल सदाकाल के लिए जलती हुई आग और गंधक की झील में डाला जाना है। यह दूसरी मृत्यु है।"